प्रदेश की संकल्पना

CONCEPT OF REGION

❖ उद्देश्य (Objective)

एक लम्बे समय तक ग्लोब (सम्पूर्ण पृथ्वी), विशेष रूप से इसके विभिन्न भागों (Parts) *के बारे में जानकारी इकट्ठा करना, उन्हे क्रमबद्ध करना तथा उन्हें समझने का प्रयास करना भूगोल विषय की मुख्य अभिरुचि तथा ध्येय रहे हैं। स्पष्ट है कि पृथ्वी के विभिन्न भागों, अर्थात, प्रदेशों का अध्ययन इस विषय के साथ इसके शैशव काल से ही जुड़ा हुआ रहा है। प्रस्तुत पाठ्य सामग्री में प्रदेश की संकल्पना तथा इसके साथ जुड़े हुए प्रदेश की परिभाषा, प्रदेशों की विशेषताएं, प्रदेशों के लक्षण, प्रदेश संकल्पना की आलोचना इत्यादि के साने पाठकों को परिचित कराने का प्रयास किया गया है ।*

❖ परिचय (Introduction)

भूतल की समझ हासिल करने की प्रक्रिया में प्रदेशों की जानकारी प्राप्त करना कितना महत्व रखता है। इसे कहने की आवश्यकता नहीं है । एक लम्ब समय तक प्रदेश भौगोलिक अध्ययन का केन्द्रीय प्रसंग रहा है । और आज भी कोई अन्य प्रसंग उसका स्थान नहीं ले पाया है । हो सकता है ठीक - ठीक आज के (आधुनिक) अर्थ में नहीं , परन्तु भौगोलिक चिन्तन के विकास के इतिहास के युनानी तथा रोमन काल से ही प्रदेश शब्द का उपयोग होता आया है । सर्वप्रथम इस शब्द का उपयोग यूनानी विद्वान हेरोडोटस तथा रोमन विद्वान स्टैबो ने किया था । आधुनिक काल में रिटर ने अपनी पुस्तक 'अर्दकुण्डे'(

ERDKUNDE) में इस शब्द को सही - सही अर्थ (Meaning) देने का प्रयास किया है । रिटर ने प्रदेश को भौगोलिक अध्ययन का एक उपागम (Approach) माना। इस उपागम को प्रादेशिक अध्ययन (Regional Study) को संज्ञा मिली । इस उपागम के समानान्तर एक दसा । उपागम का उदय हुआ जिसे क्रमबद्ध अध्ययन (Systematic Study) कहा गया । इस प्रकार किसी दुर्घटना के माध्यम से ही सही, भूगोल में 'द्वितवाद' (Dualism) का प्रादुर्भाव हुआ। इस द्वन्द की स्थिति के बावजद प्रादेशिक अध्ययन, या ऐसा कहा जाय कि प्रदेश का महत्व आज भी कम नहीं हुआ है ।

जिस प्रकार इतिहासकार (Historian) समय (Time) को कई महत्वपूर्ण काल खण्डों में बांट कर अपने अधययन की वस्तु (Object of Study) का विवरण प्रस्तुत करता है और कई क्रमबद्ध विज्ञान (Systematic Sciences) अपने अध्ययन की वस्तुओं को कई महत्वपूर्ण वर्गों (Classes) में व्यवस्थित (Arrange) करके उनका विश्लेषण करते हैं , उसी प्रकार भूगोलवेत्ता स्थान (Space) को प्रेदेशों में बांट कर उनके लक्षणों को समझने का प्रयास करता है । प्रदेश भूगोलवेत्ताओं के लिए कोई अनजाना शब्द नहीं है। वे सदियों से इसका उपयोग करते आ रहे हैं । आधुनिक भूगोल की शोध अग्रभूमि (Paradigm) चाहे जो कुछ भी रहे , प्रदेश भौगोलिक विश्लेषण का आधारभूत इकाई (Basic Unit) होता है। यदि भौगोलिक वर्णन अथवा विश्लेषण प्रदेश के आधार पर नहीं किया जाय तो वैसा वर्णन अथवा विश्लेषण अव्यवस्थित, या यह कह सकते हैं कि निरर्थक, हो

जायेगा। उदाहरण स्वरूप सम्पूर्ण भारत का वर्णन करना अथवा भारत के एक-एक पहाड़ नदी इत्यादि का विशेष वर्णन करना, दोनों ही परिस्थितियों में भारत का भौगोलिक विवरण अधूरा ही रहेगा । वर्णन को सार्थकता प्रदान करने के लिए आवश्यक होगा कि भारत को कई भागों में बाँट कर प्रदेशवार विवरण प्रस्तुत किया जाय।

यद्यपि प्रदेश बहुत अधिक महत्व का है भूगोलवेत्ता प्रदेश की संकल्पना , अर्थात् प्रदेश क्या है , इस विषय पर बहुत स्पष्ट नहीं रहे हैं । ऐसा देखा जाता है कि क्षेत्र (Area), प्रदेश (Province), भूदृश्य(Landscape), पेटी (Belt) इत्यादि शब्दों का प्रायः समान (एक ही) अर्थ में उपयोग होता आया है । इस संदर्भ में यह भी कह देना अनुचित नहीं होगा कि प्रदेश की संकल्पना भौगोलिक चिंतन के विकास के दौरान काफी विवादास्पद रही है । एसा विवाद मुख्य रूप से प्रदेशों के निर्माण की पद्धति (Methods of region formation) के साथ सम्बध रखते हैं परन्तु ऐसे विवाद की जड़ में प्रदेश की संकल्पना की अस्पष्टता को ही माना जाता है । प्रदेश की संकल्पना को स्पष्टता के साथ समझने के लिए इसके क्रमिक विकास (Evolution) पर प्रकाश डालना आवश्यक प्रतीत होता है ।

❖ प्रदेश की परिभाषा (Definition of Region)

किसी तत्व अथवा तत्व समूह का भौगोलिक अध्ययन जिस क्षेत्र (Area) विशेष के सन्दर्भ में किया जाता है । उसे प्रदेश कहते हैं। प्रादेशिक भूगोलवेत्ताओं के हाथों इसे उच्च प्राथमिकता मिलती रही है। यही कारण है कि प्रदेश को भिन्न - भिन्न नजरिये से देखा जाता,

तथा परिभाषित किया जाता रहा है । इनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है ।

1. ब्लाश के अनुसार प्रदेश एक ऐसा भूभाग (Domain) है जिसकी सीमान्तर्गत अनेक प्रतिकूल लक्षण वाली वस्तुएं किसी देवी कारण से एक साथ रहने लगे हों तथा कालान्तर में सह अस्तित्व के ढांचे में एक दूसरे के साथ समन्वय स्थापित (Adjust)कर लिया हो ।
2. हर्बर्टसन के कथनानुसर प्रदेश भूमि , जल पौधों , जन्तुओं तथा मनुष्यों , जिन्हें उनके स्थानिक सम्बन्ध (Spatial Relation) के कारण एक साथ (Together) माना जाता है , का जटिल समि (Complex Combination) है और जिसका अस्तित्व भूतल के एक निश्चित लक्षण - युक्त टुकड़े (Portion) के रूप में रहता है।
3. डिकिनसन का कहना है कि प्रदेश एक ऐसा क्षेत्र है जिसके सभी भागों में भौतिक दशाओं (Physical conditions) का एक विशेष समूह (Group) एक विशेष प्रकार की आर्थिक जीवन पद्धति को जन्म देता है ।
4. नियोजन पदाधिकारियों के अमेरिकी परिषद् के विचार में प्रदेश एक ऐसा क्षेत्र होता है जिसकी सीमान्तर्गत वातावरण के साथ मनुष्य के समन्वयन (adjustment) का अनूठा (Singular) प्रारूप विकसित हुआ है ।
5. प्लाट के अनुसार प्रदेश एक ऐसा क्षेत्र होता है जिसका सीमांकन (delimitation) भूमि के लक्षण (land character) तथा भू -

आधग्रहण (Land occupance) का सामान्य समरूपता के आधार पर किया गया हो ।

6. वूफ्टर के विचार में प्रदेश एक ऐसा क्षेत्र होता है जिसकी सीमा- अन्तर्गत वातावरणीय तथा जन सांख्यिकीय (Enviromental and demographic) कारकों के समिश्रण ने आर्थिक तथा सामाजिक संरचना की समरूपता (Uniformity) उत्पन्न किया हो ।

7. फेनेमन का कहना है कि प्रदेश ऐसा क्षेत्र होता है जिसके सभी भागों में समतुल्य भुतलीय दशाएँ (Uniform surface conditions) मिलती है तथा जो पास - पड़ोस के क्षेत्रों से सर्वथा भिन्न होता है।

8. हार्टशोर्न के मत में प्रदेश निश्चित अवस्थिति युक्त क्षेत्र होता है जो कुछ बातों में दूसरे से बहुत विशिष्ट (Distinctive) होता है तथा जिसका विस्तार उस सीमा तक रहता है जहाँ तक उसकी विशिष्टता (Distinctiveness) कायम रहती है।

9. कार्ल सावर का मत हार्टशोर्न के मत से भिन्न नहीं है । उसने क्षेत्रीय संगठन - युक्त क्षेत्र को प्रदेश माना है।

10. इसी प्रकार विट्लसी का भी मत हार्टशोर्न के मत से भिन्न नहीं है । विट्लसी के नेतृत्व वाली समिति ने 'प्रदेश' के स्थान पर 'कम्पाज' शब्द के उपयोग करने को अधिक तर्कसंगत माना । समिति ने सन्दर्भित क्षेत्र की सीमा अन्तर्गत मानवीय तथा जैविक क्रियाकलापों पर विशेष बल दिया । समिति के मत में प्रदेश से वे सभी भौतिक , जैविक तथा सामाजिक वातावरण के सभी तत्व सन्दर्भित होते हैं , जिनका कार्यिक

(Functional) सम्बन्ध मनुष्य द्वारा भू - अधिग्रहन (Land occupance) करने के प्रक्रिया के साथ रहता है ।

11. यंग के अनुसार प्रदेश ऐसा क्षेत्र होता है जो एक संस्कृति के धागे से बन्धा हुआ रहता है । आर्थिक वस्तुओं के साथ आरम्भ होकर , सूत्र - बद्धता की प्रक्रिया , क्रम से वैचारिक , शैक्षणिक तथा मनोरंजन - परक विचारों की समानता तक कार्यशील रहती है । इसके परिणाम स्वरूप सन्दर्भित क्षेत्र दूसरे क्षेत्रों से विशष्ट तथा विलग दिख पड़ता है ।

12. थेग के विचार में प्रदेश एक ऐसा क्षेत्र होता है जो पास - पड़ोस के क्षेत्रों से किसी सुपरिभाषित (Well & defined) सम्दर्भ में विशिष्ट स्वरूप युक्त रहता है ।

13. जेरासिमोव ने अपनी पुस्तक १ सोवियत जिओग्राफी टास्क एण्ड एकॉम्पलीशमेण्ट में प्रदेश को एक संश्लिष्ट एकीकृत क्षेत्र माना । यही मान्यता समकालीन सोवियत संघ के आर्थिक प्रादेशीकरण आधार बना। वर्तमान में जेरासिमोव के मत को व्यापक मान्यता प्राप्त है ।

❖ प्रदेश की विशेषताएं (Characteristics of Region)

विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाओं के अवलोकन से प्रदेशों की निम्न विशेषताएं उभरती हैं ।

i. प्रायः प्रदेशों की अपनी निश्चित (Specific) सीमा रहती है।

ii. प्रदेश की सीमा के भीतर किसी न किसी तत्व संबंधी एकरूपता (Homogeneity) अथवा समांगता दिख पड़ती है । ऐसी समांगता प्रदेशों के वर्गीकरण के आधार की भी भूमिका निभाती

है । कोई भी प्रदेश सभी सांगता निर्धारक आधार तत्व के सन्दर्भ में समरूप नहीं हो सकता है । किसी एक प्रदेश की समरूपता किसी एक तत्व , जैसे उच्चावच , तापमान , वर्षा , मिट्टी अथवा वनस्पति द्वारा , निर्धारित हुई होती है । प्रदेश की समरूपता कई तत्वों के क्षेत्रीय सामंजस्य (areal relation) पर भी आधारित हो सकती है । यहाँ यह कह देना समचीन होगा कि किसी एक तत्व पर आधारित समरूपता का क्षेत्रीय विस्तार (areal extent) किसी दूसरे तत्व पर आधारित समरूपता के क्षेत्रीय विस्तार के साथ हमेशा मेल नहीं खाता (Does not correspond) है। उदाहरण स्वरूप उच्चावच के आधार पर गंगा का मैदान एक समरूप प्रदेश है, परन्तु वनस्पति के सन्दर्भ में यह सही नहीं है। यदि वनस्पति को निर्धारक तत्व के रूप में लिया जाये तो गंगा के मैदान का पूर्वी भाग पड़ोस वाले (adjacent) शिवालिक पहाड़ियों तथा पठार के साथ मिल कर एक प्रदेश का, तथा इसका पश्चिमी भाग मालवा पठार , अरावली तथा हिमालय की निचली श्रेणियों के साथ मिल कर एक दूसरे (मानसूनी पतझड़) प्रदेश का निर्माण करता है । यही बात कई दूसरे तत्व आधारित प्रदेशों के साथ भी सही पायी जती है । इस प्रकार किसी प्रदेश की एकरूपता किसी एक तत्व के सन्दर्भ में ही पहचानी जा सकती है। स्पष्ट है कि प्रदेश उतने प्रकार के हो सकते हैं जितने प्रकार के तत्व पृथ्वी की सतह (भू - तल) पर पाये जाते हैं । ऐसा इसलिए क्योंकि यही तत्व भू- तल पर क्षेत्रीय विभिन्नता उत्पान्न करते है तथा ये ही एक- दूसरे के साथ मिल कर क्षेत्रीय सामंजस्य

स्थपित करते हैं । ऐसे समरूपता निर्माणकारी तत्व, जो अलग-अलग सामंजस्य के धागे से बंध कर अलग-अलग तत्व समूह बनाते हैं । उच्चावच , जलवायु , मिट्टी, वनस्पति अथवा विभिन्न प्रकार की फसलें इत्यादि हो सकते हैं।

iii. प्रदेश की समरूपता भौतिक , सामाजिक , आर्थिक तथा सांस्कृतिक तत्वों के क्षेत्रीय सामंजस्य (Accordant areal relation) की देन होती है । यह सही है कि सामंजस्य के धागे से बंधा हुआ तत्व-समूह प्रदेश को समरूपता प्रदान करता है, परन्तु ऐसे समूह में किसी एक तत्व की महत्ता अधिक होती है। उदाहरण स्वरूप भूमि की दाल की मात्रा में भिन्नता के आधार पर समरूप उच्चावच प्रदेशों का सीमांकन किया जा सकता है, परन्तु उनमे से ऐसे उच्चावच प्रदेश सार्थक सिद्ध होंगे जिनमे दूसरे तत्व , जैसे वनस्पति कृषि अथवा अधिवास प्रारूप (Pattern) का क्षेत्रीय सामंजस्य पास - पड़ोस के क्षेत्रों से भिन्न हो ।

iv. विशिष्टता - युक्त तथा पास - पड़ोस के क्षेत्रों से भिन्न होना प्रदेश के आवश्यक शर्त हैं । कहने का तात्पर्य यह है कि कोई भू - भाग तभी प्रदेश की पहचान पा सकता है जब उसमें विशष्टता (Distinctiveness) हो और वह पास पड़ोस के क्षेत्रों से विलग दिखायी पड़े । प्रदेश की विशिष्टता एक सापेक्षिक (Relative) संकल्पना है । इसका कोई भी निरपेक्ष मात्रात्मक मापदण्ड नहीं है । गुणात्मक (Qualitative) स्तर पर किसी प्रदेश की विशिष्टता पर निर्णय लेने के लिए पास - पड़ोस के क्षेत्रों के साथ उसकी तुलना करना आवश्यक होता है। यही कारण है कि प्रदेश को एक

ऐसा क्षेत्र माना जाता है जिसकी सीमा के भीतर अधिकतम समरूपता तथा सीमा के बाहर अधिकतम विषमता पायी जाती है। यह शर्त प्रदेशों के सीमांकन व्यवहारिक कठिनाई उपस्थित करती है।

❖ प्रदेश के लक्षण (Nature of Region)

प्रदेश एक वास्तविक ठोस इकाई होता है :- भूगोलवेत्ताओं के अतिरिक्त समाजशास्त्रियों तथा पारिस्थैतिकी वैज्ञानिकों ने प्रदेश के लक्षण से सम्बन्धित काफी चिन्तन तथा शोध किया है । उनमें से कई ने प्रदेश को एक वास्तविक ठोस इकाई माना है । ऐसे वैज्ञानिकों के अनुसार भू - तल का निर्माण ऐसी ठोस इकाइयों अर्थात् प्रदेशों के संयोग से हुआ है । उनके अनुसार उक्त ठोस इकाइयों की ठीक - ठीक पहचान तथा सीमांकन करना वैज्ञानिकों का वास्तविक कार्य है ।

प्रदेश सम्बन्धी इस अवधारणा का बीजारोपण हरबर्टसन द्वारा विश्व के प्रकृतिक प्रदेशों के सीमांकन के दौरान हुआ । हरबर्टसन ने यह मत व्यक्त किया कि प्रदेश एक वृहद् जैविक इकाई है । उच्चावच, वनस्पति , जलवायु तथा मिट्टी इत्यादि का एक - दूसरे के साथ सामंजस्य तथा इन सबों के स्वरूपों की विभिन्नता की क्षेत्रीय समरूपता इस तथ्य की पुष्टि करते हैं ।

फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं द्वारा अवलोकित भिन्न - भिन्न क्षेत्रों में भिन्न - भिन्न प्रकार की जीवन पद्धति का उद्भव भी संकेत देता है कि प्रदेशों का वास्तविक अस्तित्व होता है । अधिकांश सोवियत भूगोलवेत्ता भी इस मत को समर्थन प्रदान करते हैं । इनके मत में आर्थिक प्रदेशों का अपना - अपना वास्तविक अस्तित्व होता है ।

अलेक्जान्ड्रोव ने सुझाव दिया कि पृथ्वी की सतह के सभी तत्वों का ज्ञान उपलब्ध हो तथा समस्या को तर्क - संगत विधि से । सुलझा लिया जाये तो एक ही निष्कर्ष निकलता है कि प्रदेश एक वास्तविकता है । बहुसंख्य सोवियत भूगोलवेत्ता इस मत के पोषक हैं । यह निष्कर्ष प्राकृतिक - भौगोलिक प्रदेशों के सम्बन्ध में भी सही पायी जाती है ।

1935 में प्रदेश को परिभाषित करते हुए अमेरिकी भूगोलवेत्ता रेनर ने कहा था "प्रदेश वास्तविक इकाइयाँ हाते हैं । इनमें से प्रत्येक में अपने - अपने पास - पड़ोस के प्रदेशों से प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक भिन्नता देखी जाती है ।" 1951 में एक दूसरे अमेरिकी भूगोलवेत्ता बोग ने संयुक्त राज्य के आर्थिक क्षेत्रों को सीमांकित करते हुए कहा कि आर्थिक प्रदेश भी विशिष्टता - युक्त होते हैं । ऐसे प्रदेशों के निवासी उनकी सीमा के अन्तर्गत प्राकृतिक संसाधनों तथा वातावरण जन्य कारकों के साथ सामंजस्य स्थापित कर लिये होते हैं । स्पष्ट है कि पारिस्थैतिकीय दृष्टिकोण से भूगोल का अध्ययन करने वाले विद्वान भी एक जैविक इकाई के रूप में प्रदेश के अस्तित्व को स्वीकारते हैं । जीव विज्ञान के अतिरिक्त दार्शनिक दृष्टिकोण से भी जैविक इकाई पद का उपयोग होता रहा है । इस दृष्टिकोण में जैविक इकाई प्रकृति प्रदत्त ऐसी इकाई है जो अपने आप में सम्पूर्ण तथा विशेषता - युक्त होती है। इस अर्थ में तंत्र का भी उपयोग होता रहा है। सम्भव है वैज्ञानिक भूगोल का समर्थक बुंगी ने भी इसी अर्थ में प्रदेश को ठोस इकाई माना हो ।

ठोस इकाई अवधारण को कई आलोचनाओं को झेलना पड़ा । इनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं :

एक आलोचक के अनुसार यह कल्पनातीत है कि वायुमण्डल से लेकर भूगर्भ स्थित जल स्तर तक विस्तृत स्थान (Space) में जितने प्रकार के तत्व पाये जाते हैं उन सबों की क्षेत्रीय भिन्नता में समानता हो सकती है । यह सही है कि भू - तल पर कुछ विशिष्टता - युक्त क्षेत्र हैं, जिन्हें भौगोलिक प्रदेश की मान्यता दी जा सकती है । परन्तु अनेक ऐसे भी क्षेत्र है जो विशिष्टता विहीन हैं, जिन्हें प्रदेश निर्धारण की सर्वमान्य विधि के अन्तर्गत प्रदेश की किसी भी कोटि में नहीं रखा जा सकता है । एस सक्रमण क्षत्रा की संख्या प्रदेशों की संख्या से अधिक है । यदि किसी प्रदेश का विधि सम्मत सीमांकन नहीं किया जा सकता है तो निश्चित रूप से, उसका वास्तविक ठोस अस्तित्व संदेह के परे नहीं हो सकता है ।

यह सही है कि मानव समूहों का पारिस्थैतिकीय दृष्टिकोण से अध्ययन करना महत्वपूर्ण है , परन्तु यह मान लेना कि मनुष्य का जीवन पूरी तरह केवल वातावरण के साथ उसकी अन्तर्प्रक्रिया द्वारा निर्धारित है , और कि इसमें दूसरे कारकों की कोई भूमिका नहीं होती है , भ्रम उत्पन्न करता है । अतएव प्रदेश के वास्तविक ठोस अस्तित्व को स्वीकार कर लेना वातावरणीय निश्चयवाद (Environmental Determinism) को मान्यता दन के समान है ।

यह अवधारणा मानव जीवन (वर्तमान में) जैसा है , अर्थात् इसके स्थैतिक पहलू (Static aspect) पर बल देती है । समय की गति (आगे बढ़ने) के साथ इसमें (मानव जीवन में) जो परिवर्तन आया है अथवा जो परिवर्तन आने वाला है, उसे यह अवधारणा अनदेखी कर देती है । दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अवधारणा किसी प्रदेश

को स्वतंत्र तथा शेष सभी दूसरे प्रदेशों के साथ असम्पर्कित (Unrelated) मानता है । आज के दौर में विश्व का कोई भी भाग सभी दूसरे भागों से अलग - थलग (असर्म्पकित) नहीं रह सकता है । अन्तक्षेत्रीय गमनागमन के युग में किसी क्षेत्र को दूसरे क्षेत्रों से यदि असम्पर्कित माना जाये तो वास्तविक ठोस इकाई के रूप में उसका अस्तित्व संदेहास्पद हो जाता है । स्पष्ट है कि न तो प्रदेश जैविक इकाई है , और न ही , भू - तल अनेक प्रदेशों की समन्वित सम्पूर्णता।

वास्तविक स्थिति यह है कि अधिकांश भूगोलवेत्ता प्रदेश को भू-तल की जटिल विभिन्नता को समझने का साधन मात्र मानने लगे हैं । इस दृष्टिकोण में प्रदेश भूगोलवेत्ताओं के मस्तिष्क की उपज है । इस अर्थ में प्रदेश एक मोडेल है । इसकी सहायता से वास्तविक जगत के जटिल तत्व पुंज (Element complex) का सामान्यीकरण (Generalization) करके उसे समझने का प्रयास किया जाता है । वास्तव में वास्तविक जगत का स्वरूप इतना जटिल है कि उसके समपूर्ण स्वरूप को समझ पाना कठिन है । अत रू वास्तविक जगत की जटिलताओं को समझने के लिए उसे सामान्याकृत करक परखना आवश्यक है । इसी उद्देश्य के लिए प्रदेश का उपयोग होता है । प्रदेश मोडेल से अपेक्षित सभी दायित्वों को निभाता है ।

❖ मॉडल प्रश्न (Model Question)

- प्रदेश को परिभाषित कीजिए तथा प्रदेशों के मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।